चाँदनी रात में

नोरा बर्क

बच्चा हालाँकि बहुत ही मासूम था पर उसे पता था कि वह और उसकी माँ किसी खतरनाक रास्ते पर आगे बढ़ रहे थे। वह बड़ी सावधानी के साथ गाँव की तरफ चली जा रही थी।

सामने के मैदान में खेतों के उस पार हरी-भरी फसल के बीच से एक रास्ता गुज़रता है। वह इसी रास्ते पर दूधिया चाँदनी में नहाया हुआ खड़ा था। पास में ही फलों की बगीची भी थी। एकाएक उसकी माँ खड़ी हो गई। उसका सिर तन गया। वह अपना थूथन इधर-उधर घुमाकर कुछ सूँघ रही थी। उसके गले पर घोड़े की नाल का सा बना सफेद दाग व मैले-कुचैले पंजे चाँदनी में चमक रहे थे।

उसने ज़रा देर ठहरकर आराम किया। वह अपने काले बालों को झुलाती हुई बच्चे को साथ लिए हुए खरामा-खरामा आगे बढ़ी।

वे हिन्दुस्तान के आरामतलब भालू थे। जो अक्सर मैदानों व पहाड़ी की तराई में पाए जाते हैं। ये पशु होते बड़े भयानक और संगदिल हैं। एक तो ये बहरे होते हैं, दूसरे, इन्हें दूर की चीज़ दिखाई नहीं देती है। इसलिए अक्सर किसी मुसाफिर या लकड़हारे से टक्कर लगते ही ये हमला कर बैठते हैं। चीता या शेर ऐसा कभी नहीं किया करते। इस इलाके में जंगली भालू अक्सर रात में पहाड़ों से खेतों में उतर आते थे। इससे खेती चौपट हो जाया करती थी। सुबह होते ही सोने व आराम करने के लिए ऊपर लौट जाते। यही इनकी दिनचर्या है।

यह पहला ही मौका था जब यह भालू का बच्चा अपनी माँ के साथ इस गाँव में आया था। इसलिए वह शान से लुढ़कता चला आ रहा था। कभी हवा को सूँघता हुआ, कभी इधर-उधर देखता हुआ। वह माँ के बदन से सटा हुआ बढ़ रहा था।

तारों से जड़ी इस रात में चन्द्रमा न था। गर्मी की जगह ठण्डक ने ले ली थी। इसी तरह सवेरा भी हो जाएगा। अन्धकार का स्थान दूधिया कोहरा ले लेगा और रात जाएगी तो प्रभात आ ही जाएगा। बादलों के पीछे पहाड़ों की कालिमापूर्ण श्रखलाएँ लहरा रही थीं। मैदान में वायु और गीदड़ों की ध्वनि का राज था।

बच्चे की नाक में अनाज की सुगन्ध आने लगी थी। यानी अब गाँव दूर नहीं हो सकता। गाँव पास आने का मतलब है फल, फूल, अनाज, भैंसे और इन्सानों का पास आ जाना। वे लम्बी-लम्बी घास में आगे बढ़े आ रहे थे।

माँ बेटे को यहाँ किसी के होने की आशा न थी। पर एकाएक एक आदमी से आँखें चार हुईं तो वे चौंके। एक नंगे पैरों वाला किसान देख उसका खून जमने लगा। वे दोनों चौकन्ना हो गए।

उसने देखा कि माँ थोड़ा पीछे हटी और हमले के लिए तैयार हो गई। उसने ताबड़तोड़ हमले किए। इन्सान का गर्मागरम खून बह निकला। ताँबे से रंग वाले इन्सान के बदन से पसीने की बदबू भी आई।

आदमी दर्द भरी आवाज़ में चीख उठा। उसने भागने की कोशिश की, रेंगने व घिसटने की कोशिश भी की, किन्तु भालू उसकी धज्जियाँ उड़ा रहा था।

गाँव से टीनों की आवाज़ आई। शोर उठा। रोशनियाँ भी चमकीं। गाँववाले लाठियाँ सम्हाले टीन बजाते हुए लालटेनें लिए हुए चले आ रहे थे।

भालू जान बचाने के लिए भाग खड़े हुए।

एकाएक बहरा कर देने वाला धड़ाका हुआ। बन्दूक से निकली लौ चमकी और शीशे के छर्रे माँ भालू के बदन में जा घुसे। वह चीखी, हाँफती-लँगड़ाती हुई घिसटी और बढ़ती गई। बच्चा उसके साथ-साथ चला जा रहा था।

थोड़ी देर में शोर भी थम गया। चन्द्रमा निकल आया।

वे लम्बी घास तक पहुँच गए। पहुँचते ही हिरनों के गिरोह में भगदड़ मच गई। बारहसिंगों के सींग चाँदनी में चमक उठे। वे सब के सब सर पर पैर रखकर भाग गए।

वे दोनों अब बहुत धीरे-धीरे चल रहे थे। बच्चा अपनी माँ की ओर ताक रहा था।

उसका सिर लटक चला था। साँसें भी उखड़ी-उखड़ी आ रही थीं। वह खून उगल रही थी। बच्चा उसी की बगल में चला जा रहा था। कभी-कभी वह इधर-उधर निगाहें डाल लिया करता था। हवा भी सूँघ लेता था जिसके द्वारा रात में भी उसे जंगल का हाल मालूम होता रहता था।

आगे की ओर जब वे धीरे-धीरे बढ़ रहे थे तो उन्हें पत्थरों के नीचे बहते हुए जल की कलकल ध्वनि सुनाई दी। भालू माँ ने भी यह ध्वनि सुनी। वह हाँफती हुई किसी प्रकार पानी की ओर चल दी। उन्हें आता देख दलदल के पास वाले हिरन चौकड़ी भरकर भागे।

धारा में उतरते हुए उन्हें जल के ऊपर से आने वाली ठण्डी हवा का स्पर्श मिला। नदी की तलहटी में चमकदार गोल रुपए जैसे पत्थरों का किनारा था। उन पर चाँदनी फैली पड़ी थी।

भालू माँ उधर ही बढ़ी। वह हाँफ गई और धड़ाम से गिर पड़ी। उसका थूथन पानी की पतली रेखा को छू रहा था। साँसें धीमी-धीमी आ रही थीं। उसके थूथन से निकलता हुआ खून पानी को लाल कर रहा था।

उसकी पुतलियाँ पथरा गईं। आँखें हमेशा के लिए बन्द हो गईं। वह शान्त बे-हरकत पड़ी थी।

बच्चा भालू माँ की बगल में पत्थरों पर बैठा था। माँ के लिए रात में सोना अशोभनीय था। पर, बेटा माँ से कैफियत तलब करने की हिम्मत कैसे कर सकता था।

हवा में ठण्ड बढ़ती जा रही थी। वह गर्म रहने के लिए माँ से चिपटकर जा बैठा। उसने अनुभव किया कि वहाँ तो और भी ज़्यादा ठण्ड लग रही

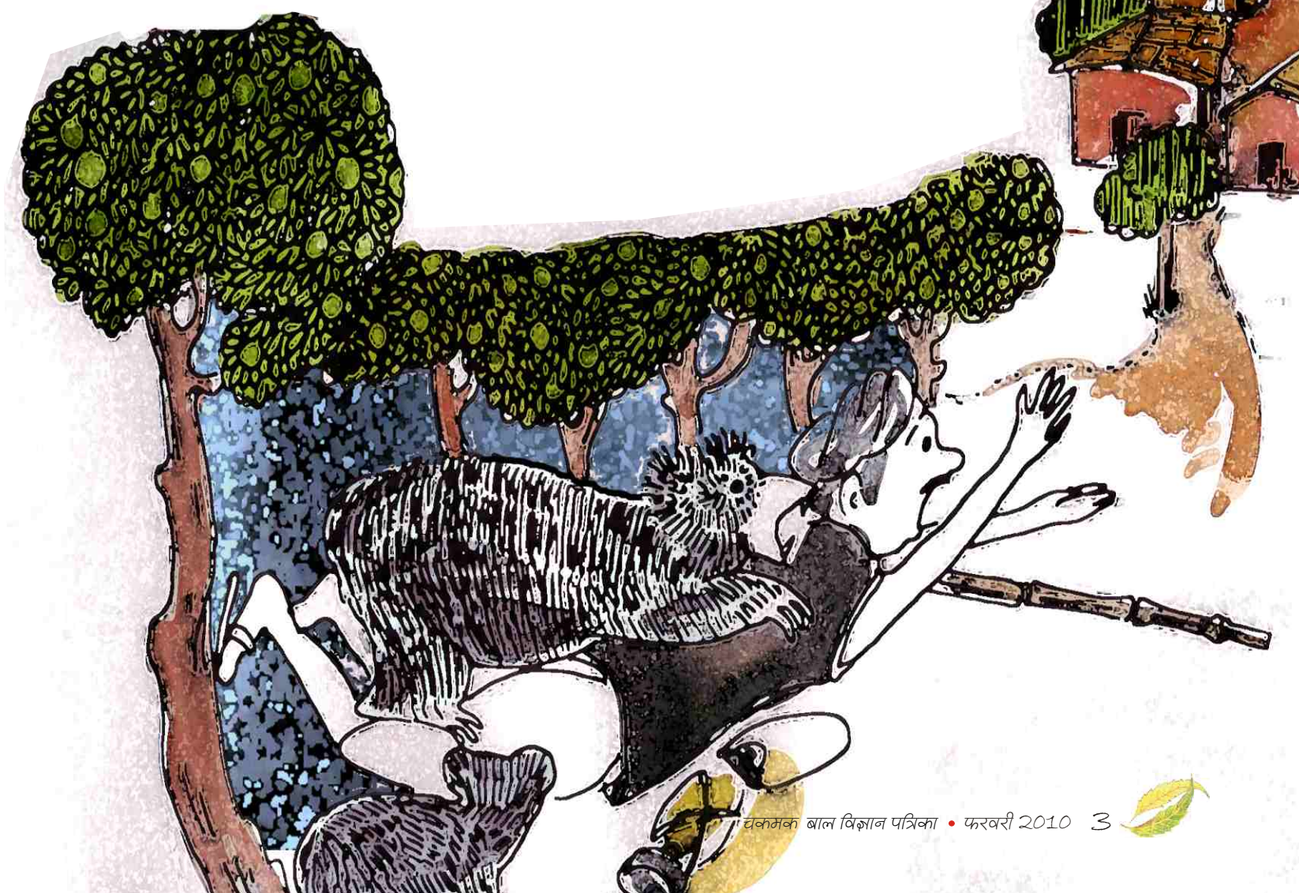

है। उसे भूख भी लगी। उसने माँ के आसपास चक्कर काटे-घुरघुराया भी। फिर बैठा – उठ खड़ा हुआ – फिर बैठ गया। ठण्डा पानी पीकर उसने कुछ देर के लिए पेट की ज्वाला शान्त की। पर पेट की आग पानी से नहीं, खाने से बुझती है।

वह फिर से माँ की बगल में आकर बैठ गया।

तारों भरी शान्त रात। चूहे घास में दाने-चारे के लिए दौड़-धूप कर रहे थे। और उल्लू पंख फैलाए उन चूहों के शिकार में व्यस्त था। पानी की सतह पर मच्छर भनभना रहे थे। दूर से शेर के गुर्राने की आवाज़ आ रही थी। बेचारा भालू का बच्चा माँ की बगल में इस उम्मीद में बैठा था कि वह कब उठे और हम शिकार को चलें।

धीरे-धीरे उसकी परेशानी डर में बदलने लगी। डर के साथ-साथ कुछ शोक में लिपटे भाव भी आए। वह सहम गया। उसके रोंगटे खड़े हो गए। वह नितान्त अकेला था।

बड़ी देर के बाद अँधकार छट चला। नदी पर कोहरा छाया हुआ था लम्बी-लम्बी घास – जिसमें हाथी खो जाएँ – वह भी कोहरे से ढँकी थी। जंगली मुर्गे ने बाँग लगाई। सूरज आग के गोले की तरह निकल आया।

उसकी माँ के चेहरे पर चींटियाँ घिर आईं। आँखों पर मक्खियाँ बैठने लगीं। फिर आसमान से एक गिद्ध ने उस पर झपट्टा मारा। उसने उसकी माँ की गर्दन पर चोंच गड़ाई। उस पर भी पंख फड़फड़ाएँ। बेचारा बच्चा उठकर पास की घास में चला गया। बीसियों पक्षियों ने हमला कर दिया। वे आपस में लड़े-झगड़े। फिर पहले ने गोश्त की बोटी नोची। उसे मुँह में दबाया और पास के ठूँठ पर जा पहुँचा। धीरे-धीरे सभी पक्षियों ने ऐसा ही किया। फिर सब खा-पीकर उड़ गए।

बेचारे बच्चे ने माँ तक आने की फिर हिम्मत की, पर अब माँ खत्म हो चुकी थी। उसकी हड्डी-पसली पत्थरों पर बिखरी पड़ी थी।

उसने ध्यान से उसकी ओर देखा और बिलखने लगा। उसे अब बड़ी तेज़ भूख लगी थी किन्तु अब दिन हो गया था और वह दिन की रोशनी में कुछ भी देख नहीं सकता था। इसलिए वह सिकुड़कर तलहटी में एक पेड़ की खोखली जड़ों के बीच सो गया। उसने पेट दबा लिया। उसके चारों ओर गीली मिट्टी की महक लहरा रही थी। वहाँ वह गर्मी से बचा हुआ था। भालू को अपने बालों से बहुत गर्मी लगती है। वह लगभग बहरा था। उसे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ा और वह चैन से सोता रहा। नींद में वह शहद, फल और चींटियों के सपने लेता रहा। उसे लाल गोश्त भी ख्वाब में दिखाई दिया।

शाम के समय वह जागा। उसने माँ से हिदायतें चाहीं तभी याद आया कि माँ तो...। एक बार फिर वह नदी के किनारे तक गया पर वहाँ अब क्या रखा था? उसने सूँघकर यह जानने की कोशिश की कि वह किधर गई। शेर के पाँवों के निशान तो वहाँ मिले पर माँ के पदचिन्ह कहीं न मिले। रेत पर हिरनों, हाथियों के पदचिन्ह भी मिले। भालू के चिन्ह भी मिले, पर वे बहुत ही पुराने थे। क्या वह गाँव की ओर चली गई?

उसे गाँव का रास्ता याद हो आया। वह उसकी आँखों के सामने झूल उठा साफ-साफ पर खतरों से भरा हुआ। वहाँ खाने को बहुत कुछ है। उसने उधर देखा। मन ललचाया पर खतरा भी याद आया। मन डर गया। अन्तरात्मा की पुकार आई कि उसे मनुष्यों से दूर ही रहना चाहिए।

उसकी भूख-प्यास मर चुकी थी। हाँ, पेट में एक दर्द-सा ज़रूर था। उसने पेट को दबा कर दर्द को कम करना चाहा। फिर आगे बढ़ चला।

वह रही दीमक की पहाड़ी – लम्बी, ऊँची, पत्थर जैसी सख्त। अगर उसकी माँ यहाँ होती तो उसने इसे तोड़ गिराया होता। वह उसकी दो-एक मीनारें तोड़कर, जो हवा पहुँचाने के लिए बनी होती है, उन्हीं पर थूथन जमा देती। और फिर साँस के साथ खींचकर उन नन्हीं दीमकों का नाश्ता करती।

बच्चे ने एक नन्हीं चोटी को धर दबोचा। उसमें दूध के दाँत जमाकर गड़ाए। चोटी टूट गई। उसने मुँह में गई मिट्टी थूक दी। उसे वहाँ बहुत-सी दीमकें दौड़ती-भागती नज़र आईं। दीमकें र प्रकाश सहन नहीं कर सकतीं। वे दौड़-भाग रही थीं ताकि अपने अन्धेरे घर में सुरक्षित हो जाएँ। उसने सुराख पर थूथनी जमा दी। और खींच-खींचकर दीमक चटकोरने लगा। थोड़ी ही देर में उसने नज़र आ रही सब दीमकों को खत्म कर डाला। उसने पहाड़ी पर पंजे चलाए पर हार माननी पड़ी क्योंकि वह सीमेंट-कॉंक्रीट की तरह कठोर थी।

वह गाँव की ओर बढ़ा।

एक खेत में कँटीली झाड़ी के पास एक बकरी का बच्चा दिखाई पड़ा। अन्धेरे में वह भूरा दिखा। दोनों की आँखें मिलीं। वह मिमिया उठा। डर के मारे काँप गया। भालू की अन्तरात्मा ने कहा, "यह रहा तेरा भोजन।"

नन्हें भालू ने नन्हें बच्चे की बुरी तरह नोचा-घसीटी की। वह मर गया। मरे बच्चे को नन्हें भालू ने डटकर खाया। पहले नन्हीं खुरी से ऊपर टाँग पर दाँत लगाए और धीरे-धीरे दिल के मुलायम स्वादिष्ट गोश्त तक जा पहुँचा।

मरे हिरन का कुछ हिस्सा उसने झाड़ी में छिपा दिया ताकि बिल्ली या गन्दे गीदड़ उसे न खा सकें।

इस भोजन के बाद नन्हें भालू ने कुछ दिन कन्द-मूल और चींटियों का चूरन चक्खा। कभी भूखा भी रहा। धीरे-धीरे जंगल में रहकर वह पक्का हो गया। उसने खटमिट्ठे बेर भी खोज लिए। वहीं बेरियों की आड़ में अपना ठिकाना भी टहनियों से बना लिया।

यहाँ से वह आसपास के फल तोड़ सकता था। चाँदनी रातों में चारों ओर देख सकता था। हवा खा सकता था। शहद की दूर से आने वाली खुशबू ले सकता था और सबसे बढ़कर अब वह अपने दृश्य-जगत का राजा था।

सभी चित्रः कनक